Psychology and Necessity in the Modern Age

Satyam Bhambhu

आधुनिक युग में मनोविज्ञान और आवश्यकता

सत्यम भांभू

I. परिचय

अति आधुनिकता एवं मशीनीकरण के कारण आज मनोविज्ञान मानव जीवन का अहम पहलू बन गया है | चाहे छोटे बच्चे हो , युवा हो या बुज़ुर्ग - सभी अवसाद से ग्रस्त है | सिर्फ मनोविज्ञान के द्वारा ही आज के मानव को सही दशा एवं दिशा मिल सकती है | मनोविज्ञान ही मानव को इस अवसाद ,तनाव एवं आत्महत्या जैसी दुष्प्रवृतियों से बाहर निकाल सकता है |

अकेलापन ,कुंठा ,संत्रास ,मृत्युबोध ,निराशा ,व्यग्रता ने आधुनिक मानव की नींव को हिला दिया है |यही कारण है कि मनोविज्ञान चिकित्सा एवं साहित्य मैं अहम पहलू बनकर उभरा है |मनोविज्ञान ही -संत्रास ,अकेलापन अजनबीपन ,मृत्युबोध ,आत्मनिर्वासन ,व्यर्थता जैसी परवर्तियों से आये मानवीय जीवन के खोखलेपन को दूर क्र सकता है |

यह दीप अकेला स्नेह भरा |

इसे भी पंक्ति को दे दो ||

इसी का उजागर रूप है

सन् 1834 में वेबर ने स्पर्शेन्द्रिय संबंधी अपने प्रयोगात्मक शोधकार्य को एक पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। सन् 1831 में फेक्नर स्वयं एकदिश धारा विद्युत् के मापन के विषय पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित कर चुके थे। कुछ वर्षों बाद सन् 1847 में हेल्मो ने ऊर्जा सरंक्षण पर अपना वैज्ञानिक लेख लोगों के सामने रखा। इसके बाद सन् 1856 ई, 1860 ई तथा 1866 ईदृ में उन्होंने "आप्टिक" नामक पुस्तक तीन भागों में प्रकाशित की। सन् 1851 ई तथा सन् 1860 ई में फेक्नर ने भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दो महत्वपूर्ण ग्रंथ (ज़ेंड आवेस्टा तथा एलिमेंटे डेयर साईकोफ़िजिक प्रकाशित किए।

सन् 1858 ई में वुंट हाइडलवर्ग विश्वविद्यालय में चिकित्सा विज्ञान में डाक्टर की उपधि प्राप्त कर चुके थे और सहकारी पद पर क्रियाविज्ञान के क्षेत्र में कार्य कर रहे थे। उसी वर्ष वहाँ बॉन से हेल्मोल्त्स भी आ गए। वुंट के लिये यह संपर्क अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि इसी के बाद उन्होंने क्रियाविज्ञान छोड़कर मनोविज्ञान को अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

स्किनर के अनुसार, "मानव व्यवहार एवं अनुभव से सम्बंधित निष्कर्षो का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान कहलाता है। "जे.एम. स्टीफन के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का क्रमिक अध्ययन है। "

आधुनिक मनोविज्ञान के जनक - विलियम्स जेम्स

बुद्धि परीक्षणों के जन्मदाता-अल्फ्रेडबिने

बुद्धि संरचना का सिद्धांत-गिलफोर्ड

मनोविश्लेषण विधि के जन्मदाता-सिगमंड फ्रायड

स्वप्न विश्लेषण विधि के प्रतिपादक-सिगमंड फ्रायड

II. मनोविज्ञान के सम्प्रदाय

- **1879**, प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, संरचनावाद -- डब्ल्यू वुन्ट
- **1896**, मनोविश्लेषण -- सिग्मण्ड फ्रॉयड
- **1913**, व्यवहारवाद -- जॉन ब्रोडस वाट्सन
- **1954**, रेशनल इमोटिव बिहेविअरल थिरैपी -- अल्बर्ट एलिस
- **1960**, संज्ञानात्मक चिकित्सा -- आरोन टी बैक
- **1967**, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान -- उल्रिक नाइजर
- **1962**, मानववादी मनोविज्ञान -- अमेरिकन एसोशिएशन ऑफ ह्युमनिस्टिक साइकोलॉजी
- **1940**, गेस्ताल्तवाद -- फ्रिट्ज पर्ल्स

III. आधुनिक मनोविज्ञान का विकास

1. 1879 विल्हम वुंट ने जर्मनी के लिप्सिग मैं प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला को स्थापित किया

2. 1890 विलियम जेम्स ने प्रिंसिपल आफ साइकोलॉजी प्रकाशित की |

3 1916 कलकत्ता विश्विद्यालय में मनोविज्ञान का प्रथम विभाग खुला |

4.. 1922 मनोविज्ञान को इंडियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन में सम्मलित किया गया |

5.. 1924 भारतीय मनोविज्ञानिक संघ की स्थापना की गई |

6. 1954 इलाहाबाद में मनोविज्ञान शाला की स्थापना |

7 1962 रांची में हॉस्पिटल फार मैंटल डिशीशीज़ की स्थापना |

8. 1997 गुड़गावं ,हरियाणा में नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर की स्थापना|

नोबेल पुरस्कार :-

1. 1904 में इवान पावलव को पाचन व्यवस्था कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला जिससे अनुक्रियाओं के विकास सिदान्त को समझा जा सकता है |
2. 2.1978 निर्णयन पर किये गए कार्य के लिए हर्बर्ट साइमन को नोबेल पुरस्कार प्राप्त |
3. 3.1981.डेविड ह्यूबल एवं टास्ट्रेन वीसल को मस्तिष्क की दर्ष्टि कोशिकाओं पर शोध के लिए नोबेल पुरस्कार |
4. रोजर स्पेरी को मस्तिष्क विच्छेद अनुसंधान के लिए नोबेल पुरस्कार |

IV. भारत में मनोविज्ञान की आवश्यकता

करीब तेरह करोड़ भारतीयों को किसी न किसी रूप में मानसिक चिकित्सा की जरूरत है। प्रत्येक हजार जनसंख्या में 10 से 20 लोग जटिल मानसिक रोगों से ग्रस्त हैं, जबकि दुखदाई और आर्थिक अक्षमता पैदा करने वाले भावुक रोगों के शिकार लोगों की संख्या इसका तीन से पांच गुना है। इतने लोगों के इलाज के लिए कोई 32 हजार मनोचिकित्सकों की जरूरत है, जबकि देशभर में इनकी संख्या बामुश्किल साढ़े तीन हजार है और इनमें भी तीन हजार तो चार महानगरों तक ही सिमटे हैं। सन् 17में पाइनल नामक व्यक्ति ने पेरिस में मानसिक रोगियों का मानवीय संवेदनाओं के साथ इलाज करना शुरू किया था। इससे पहले ऐसे रोगियों को जंजीरों से जकड़ कर रखा जाता था। देखा गया कि ऐसे मरीज उत्तेजित होकर तोड़-फोड़ करते थे। पाइनल का प्रयोग सफल रहा। इसी सामाजिक सुधार से प्रेरित होकर अमेरिका में बेंजामिन रश और ब्रिटेन में कोनोली व ट्यूक ने मनोरोगियों की 'सामाजिक मनोविकार चिकित्सा' शुरू की। भारत में पागलपन कानून 1में बनाया गया था, जिसमें अदालती प्रमाण-पत्र के जरिए रोगियों को केवल पागलखानों में इलाज की सीमा तय की गई थी, लकिन 1में इस कानून में बदलाव किया गया और मरीज को खुद की इच्छा पर भर्ती होने, सामान्य अस्पतालों में भी इलाज कराने जैसी सुविधाएं दी गई हैं। दिनोंदिन बढ़ रही भौतिक लिप्सा और उससे उपजे तनावों व भागमभाग की जिंदगी के चलते भारत में मानसिक रोगियों की संख्या पश्चिमी देशों से भी ऊपर जा रही है। विशेष रूप से महानगरों में ऐसे रोग कुछ अधिक ही गहराई से पैठ कर चुके हैं। दहशत और भय के इस रूप को फोबिया कहा जाता है। इसकी शुरुआत होती है चिड़चिड़ेपन से। बात-बात पर बिगड़ना और फिर जल्द से लाल-पीला हो जाना ऐसे 'रोगियों' की आदत बन जाती है। काम से जी चुराना, बहस करना और खुद को सच्चा साबित करना इनके प्रारंभिक लक्षण हैं। जहां एक ओर मर्ज बढ़ता जा रहा है, वहीं हमारे देश के मानसिक रोग अस्पताल सौ साल पुराने पागलखाने के खौफनाक रूप से ही जाने जाते हैं। ये जर्जर, डरावनी और संदिग्ध इमारतें मानसिक रोगियों की यंत्रणाओं, उनके प्रति समाज के उपेक्षित रवैये और सरकारी उदासीनता की मूक गवाह हैं। मानसिक विक्षिप्त लोगों को समाज से दूर ऊंची चाहरदीवारियों में नारकीय जीवन जीन को मजबूर करना क्या मौलिक अधिकारों का हनन नहीं है? छोटे-छोटे दड़बेनुमा जेल की कोठरियां। वहां जानवरों से भी बदतर भरे मरीज, कहीं पेड़ या खंभों से बंधे महिला-पुरुष, उनकी देखभाल के लिए सरकार से मोटा वेतन पा रहे लोगों के अमानवीय अत्याचार। अधिकांश रोगियों के लिए तो यह ताजिंदगी सजा है। अदालत से सजायाफ्ता आजीवन कैदी ता कुछ साल बाद छूट भी जाता है, लकिन पागलखानों से मुक्ति कतई संभव नहीं है। अलबत्ता तो वहां का माहौल उन्हें ठीक होने नहीं देता है, यदि कोई ठीक हो जाए, समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता। इन अस्पतालों में ऐसे रोगियों की संख्या सैकड़ों में है, जो पिछले 35-40 साल स कैद हैं। कहीं जमीन-जायदाद पर कब्जा करन के लिए अपने ही रिश्तेदारों को पागल ठहरान की साजिश है ता कहीं सामाजिक रुतबे में 'पागलखाना रिटर्न' का धब्बा लगन की हिचक। देश के मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम,1में रोगियों के पुनर्वास, इसके कारणों पर नियंत्रण, दूरस्थ अंचलों के डॉक्टरों को विशेष ट्रेनिंग सहित न जाने क्या-क्या लुभावन कार्यक्रम दर्ज हैं, लकिन वास्तविकता के धरातल पर मानसिक रोगी सरकार व समाज दोनों की हेय दृष्टि से आहत हैं। हमारे देश की एक अरब होती आबादी के लिए केवल 42 मानसिक रोग अस्पताल हैं, जहां 20,000 बिस्तर हैं। यह जरूरत का एक फीसदी भी नहीं है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की एक रिपोर्ट भी इस बात का प्रमाण है कि ऐसे रोगियों की बड़ी संख्या इलाज का खर्च उठाने में असमर्थ है। सरकारी अस्पतालों के नारकीय माहौल में जाना उनकी मजबूरी होता है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग मानता रहा है कि देश भर के पागलखानों की हालत बदतर है। इसे सुधारन के लिए कुछ साल पहले बंगलौर के राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और चेतना विज्ञान संस्थान (निमहान्स) में एक परियोजना शुरू की गई थी, लकिन उसके किसी सकारात्मक परिणाम की जानकारी नहीं है। यह परियोजना भी नाकाफी संसाधनों का रोना रोते हुए फाइलों में ठंडी हो गई। वैसे तो 1में सुप्रीम कोर्ट भी मानसिक अस्पतालों में बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करवान के निर्देश दे चुका है। आदेश के बाद दो-चार दिन तो सरकार सक्रिय दिखी, पर स्थितियों में लेशमात्र सुधार नहीं हुआ। बानगी के तौर पर देश के सबसे पुराने आगरा के पागलखान के हालात को देखें। 40 एकड़ में फैली इस 'जेल' के रखरखाव का सालाना बजट मात्र ढाई लाख है। यहां स्टाफ तो 500 का है, लकिन डॉक्टर व नर्स मिला कर 30 भी नहीं हैं। अधिकांश डॉक्टरों के वहीं पास में निजी क्लीनिक हैं। वैसे यहां 400 से अधिक मरीज नहीं रखे जा सकते, पर इनकी संख्या कभी भी 700 स कम नहीं रही है। इतने मरीजों को साल भर खाना देन का बजट मात्र 14 लाख रुपए और कपड़ों पर व्यय की सीमा दो लाख रुपए है। साढ़े तीन सौ मुस्टंडे अटेंडेंट, जिनके आतंक से रोगी थर-थर कांपते हैं, उनकी मौजूदगी में मरीजों के तन तक क्या पहुंचता होगा, इसकी कल्पना ही रोंगटे खड़े कर देती है। हमारे देश में कुत्ते-बिल्लियों की ठीक तरह से देखभाल के लिए अखबारों के नियमित कालम छपते हैं। इलेक्ट्रानिक्स मीडिया पर भी वे प्राथमिकता में हैं, लकिन मानव योनि में जन्मे, किन्हीं हालातों के शिकार होकर मानसिक संतुलन खोए लोगों के पशु से भी बदतर जीवन पर न तो सरकार गंभीर है और न ही समाज संवेदनशील !

V. संदर्भ ग्रन्थ

१. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान " रचना शर्मा " |

२.मनोविज्ञान : मानव व्यवहार का अध्ययन "मिश्र ,ब्रज कुमार " |

३.शिक्षा मनोविज्ञान "एच.एस.सिन्हा एवं रचना शर्मा " |

४.आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान मॉडर्न एब्नार्मल साइकोलॉजी " प्रो. नित्यानंद मिश्रा " |

VI. अन्य लिंक (others link)

[1]. https ://books.google.co.in/ books.

[2]. http://hi.m.wikipedia.